The Chitransh Academic & Research
International Journal of Multidisaciplinary Reseaech
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 3 |June 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

पसमांदा मुस्लिम समुदाय की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

डॉ0 मो0 इर्शाद अली [1] एवं बीबी सफीना[2]

[1]सहायक प्राचार्य सह विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान विभाग

बी0एन0 कॉलेज, भागलपुर

तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर–812007

[2]शोधार्थी

स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग

तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर–812007

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: ***18.06.25***

*Accepted:****24.06. 25***

Published: ***30/06/25***

Keywords : जातिगत, भेदभाव, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक इत्यादि

.

ABSTRACT

पसमांदा मुस्लिम समुदाय, भारतीय मुस्लिम समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक रूप से हाशिए पर रहा है। पसमांदा शब्द फारसी मूल का है, जिसका अर्थ है पीछे छूट गए या हाशिए पर पड़े हुए। यह शब्द मुख्य रूप से उन मुस्लिम समुदायों को संदर्भित करता है जो सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े हैं, जैसे कि अजलाफ (पिछड़े मुस्लिम) और अरजाल (दलित मुस्लिम)। अनुमान के अनुसार, भारत में मुस्लिम आबादी का लगभग 80–85 प्रति"ात हिस्सा पसमांदा मुस्लिमों का है, जो मुख्यतः निम्न और मध्यम जातियों से आते हैं, जैसे कि अंसारी, कुरैशी, राइन, दर्जी, और मंसूरी आदि।

भूमिका :

पसमांदा मुस्लिम समुदाय की समस्याएँ और चुनौतियाँ भारतीय समाज की जटिल सामाजिक संरचना, ऐतिहासिक भेदभाव, और आधुनिक राजनीतिक–सामाजिक गतिशीलता से जुड़ी हुई हैं। इस समुदाय को न केवल सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन का सामना करना पड़ता है, बल्कि मुस्लिम समाज के भीतर उच्च वर्ग (अशराफ) मुस्लिमों द्वारा जातिगत भेदभाव और राजनीतिक हाशिए पर धकेलने की चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। इस लेख में, हम पसमांदा मुस्लिम समुदाय की समस्याओं और चुनौतियों को विस्तार से समझने की कोशिश करेंगे, साथ ही उनके समाधान के लिए संभावित उपायों पर भी चर्चा करेंगे।[1]

पसमांदा मुस्लिम समुदाय : एक परिचय

भारतीय मुस्लिम समाज को सामान्य रूप से एक समरूप समुदाय के रूप में देखा जाता है, लेकिन वास्तव में यह समाज भी जातिगत और सामाजिक स्तरों पर विभाजित है। मुस्लिम समाज को तीन मुख्य वर्गों में बांटा जा सकता है :–

अशराफ :

यह उच्च वर्ग के मुस्लिम हैं, जो सैयद, शेख, पठान, मुगल, और अन्य संभ्रांत समुदायों से संबंधित हैं। ये समुदाय ऐतिहासिक रूप से सत्ता, शिक्षा, और संपत्ति के मामले में प्रभावशाली रहे हैं।

अजलाफ :

यह मध्यम और निम्न जातियों के मुस्लिम हैं, जो मुख्य रूप से हिंदू समाज की निम्न और मध्यम जातियों से धर्मांतरण के माध्यम से इस्लाम में शामिल हुए। इनमें अंसारी (जुलाहे), कुरैशी (कसाई), सलमानी (नाई), और राइन (कुंजड़े) जैसी जातियाँ शामिल हैं।

अरजाल :

यह दलित मुस्लिम हैं, जो हिंदू समाज की सबसे निचली जातियों से इस्लाम में आए। इनमें हलालखोर (मेहतर), लालबेगी, और अन्य समुदाय शामिल हैं।

पसमांदा मुस्लिम शब्द अजलाफ और अरजाल समुदायों को सामूहिक रूप से संदर्भित करता है। यह समुदाय सामाजिक, आर्थिक, और शैक्षिक रूप से हाशिए पर रहा है और मुस्लिम समाज के भीतर अशराफ वर्ग के प्रभुत्व का सामना करता है। पसमांदा मुस्लिम आंदोलन, जिसकी शुरुआत 1998 में अली अनवर द्वारा 'ऑल इंडिया पसमांदा मुस्लिम महाज' के गठन के साथ हुई, इस समुदाय की आवाज को बुलंद करने और उनके अधिकारों की वकालत करने का प्रयास करता है।[2]

पसमांदा मुस्लिम समुदाय की प्रमुख समस्याएँ :

पसमांदा मुस्लिम समुदाय को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो उनकी सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक स्थिति से जुड़ी हैं। इन समस्याओं को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है :

सामाजिक भेदभाव और जातिवाद :

इस्लाम धर्म समानता और भाईचारे पर जोर देता है, लेकिन भारतीय मुस्लिम समाज में जातिवाद की जड़ें गहरी हैं। पसमांदा मुस्लिमों को अशराफ मुस्लिमों द्वारा सामाजिक रूप से हेय दृष्टि से देखा जाता है। सामाजिक समारोहों और वैवाहिक संबंधों में भी अशराफ मुस्लिम पसमांदा मुस्लिमों से दूरी बनाए रखते हैं। इस भेदभाव के कारण पसमांदा मुस्लिम समुदाय सामाजिक एकता और सम्मान से वंचित रहता है, जिसका उनके आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है।[3]

आर्थिक पिछड़ापन :

पसमांदा मुस्लिम समुदाय आर्थिक रूप से कमजोर है। अधिकांश पसमांदा मुस्लिम परंपरागत व्यवसायों जैसे बुनकरी, कसाईगिरी, नाई का काम, और सफाई कार्यों में संलग्न हैं, जो कम आय वाले और सामाजिक रूप से कम प्रतिष्ठित माने जाते हैं। 2006 की सच्चर समिति की रिपोर्ट के अनुसार[4] :–

- मुस्लिम समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति हिंदू समाज की अनुसूचित जातियों और जनजातियों के समान है।
- मुस्लिमों में ओबीसी समुदाय, जो मुख्य रूप से पसमांदा हैं, की आर्थिक स्थिति विशेष रूप से खराब है।
- नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गेनाइजेशन के आंकड़ों के अनुसार, मुस्लिमों में ओबीसी जनसंख्या 40.7 प्रति"ात है, जो देश के कुल पिछड़े समुदाय का 15.7 प्रति"ात है।
- आर्थिक संसाधनों तक सीमित पहुँच, शिक्षा की कमी, और रोजगार के अवसरों का अभाव पसमांदा मुस्लिमों को गरीबी के चक्र में फंसाए रखता है।

शैक्षिक पिछड़ापन :

शिक्षा किसी भी समुदाय की प्रगति की नींव है, लेकिन पसमांदा मुस्लिम समुदाय शैक्षिक रूप से बहुत पिछड़ा हुआ है। सच्चर समिति की रिपोर्ट के अनुसार :–

- मुस्लिम समुदाय में साक्षरता दर अन्य समुदायों की तुलना में कम है।
- पसमांदा मुस्लिमों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या अत्यंत कम है।
- स्कूल ड्रॉपआउट दर, विशेष रूप से लड़कियों में, बहुत अधिक है।

शिक्षा तक पहुँच की कमी का कारण आर्थिक तंगी, सामाजिक भेदभाव, और स्कूलों की अपर्याप्त सुविधाएँ हैं। इसके अलावा, पसमांदा समुदाय की महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने में और भी अधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, क्योंकि सामाजिक रूढ़ियाँ और आर्थिक दबाव उन्हें स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं।

राजनीतिक हाशिए पर होना :

पसमांदा मुस्लिम समुदाय का राजनीतिक प्रतिनिधित्व बहुत कम है। भारतीय राजनीति में मुस्लिम नेतृत्व मुख्य रूप से अशराफ मुस्लिमों के हाथों में रहा है, जो पसमांदा समुदाय के मुद्दों को नजर अंदाज करते हैं। अधिकांश मुस्लिम सांसद और विधायक अशराफ समुदाय से आते हैं। पसमांदा मुस्लिमों को राजनीतिक दलों द्वारा केवल वोट बैंक के रूप में देखा जाता है, और उनकी समस्याओं को हल करने के लिए ठोस नीतियाँ नहीं बनाई जातीं। हाल के वर्षों में, कुछ राजनीतिक दलों, जैसे कि भारतीय जनता पार्टी ने पसमांदा मुस्लिमों को अपने साथ जोड़ने की कोशिश की है, लेकिन यह प्रयास अभी तक पूरी तरह सफल नहीं हुआ है।[5]

धार्मिक और सांस्कृतिक भेदभाव :

इस्लाम में जाति व्यवस्था की कोई औपचारिक मान्यता नहीं है, लेकिन भारतीय मुस्लिम समाज में सामाजिक स्तरबंदी स्पष्ट रूप से मौजूद है। पसमांदा मुस्लिमों को अक्सर निम्न माना जाता है, और उनके साथ धार्मिक स्थानों पर भी भेदभाव किया जाता है। कुछ धार्मिक नेता पसमांदा आंदोलन को गैर–इस्लामी करार देते हैं, जिसके कारण इस

समुदाय का आंदोलन व्यापक समर्थन प्राप्त करने में असफल रहता है।

पसमांदा मुस्लिम समुदाय की चुनौतियाँ :

पसमांदा मुस्लिम समुदाय को अपनी स्थिति सुधारने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियाँ सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक स्तर पर हैं और इनका समाधान जटिल और दीर्घकालिक है :–

मुस्लिम समाज के भीतर एकता की कमी :

पसमांदा मुस्लिम समुदाय को मुस्लिम समाज के भीतर ही एकता की कमी का सामना करना पड़ता है। अशराफ मुस्लिमों का प्रभुत्व और पसमांदा समुदाय के प्रति उनकी उदासीनता इस समुदाय के लिए एक बड़ी चुनौती है। इसके अलावा, पसमांदा समुदाय के भीतर भी विभिन्न जातियों और उप–समूहों के बीच एकता की कमी है, जो उनके आंदोलन को कमजोर करती है।

राजनीतिक दलों की अवसरवादी रणनीति :

हाल के वर्षों में, कुछ राजनीतिक दलों ने पसमांदा मुस्लिमों को अपने वोट बैंक के रूप में देखा है और उनके मुद्दों को उठाने की कोशिश की है। उदाहरण के लिए, भारतीय जनता पार्टी ने 2022 और 2023 में पसमांदा मुस्लिमों के साथ कई बैठकें आयोजित कीं और उनकी समस्याओं को संबोधित करने का वादा किया। हालांकि, इन प्रयासों को अक्सर अवसरवादी माना जाता है, क्योंकि इन दलों ने पसमांदा समुदाय के लिए दीर्घकालिक नीतियाँ लागू करने में बहुत कम प्रगति की है।[6]

शिक्षा और रोजगार के अवसरों की कमी :

पसमांदा मुस्लिमों के लिए शिक्षा और रोजगार के अवसरों की कमी एक प्रमुख चुनौती है। अधिकांश पसमांदा मुस्लिम ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, जहाँ स्कूलों और कॉलेजों की कमी है। इसके अलावा, उनके परंपरागत व्यवसाय, जैसे बुनकरी और कारीगरी, आधुनिक अर्थव्यवस्था में कम लाभकारी हो गए हैं।

सामाजिक जागरूकता और नेतृत्व की कमी :

पसमांदा मुस्लिम समुदाय में सामाजिक जागरूकता और प्रभावी नेतृत्व की कमी है। हालांकि, अली अनवर जैसे नेताओं ने पसमांदा आंदोलन को गति देने की कोशिश की है, लेकिन समुदाय के भीतर व्यापक जागरूकता और संगठन की कमी के कारण यह आंदोलन राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी नहीं हो सका। इसके अलावा, कुछ पसमांदा नेताओं की अति महत्वाकांक्षा ने भी आंदोलन को नुकसान पहुँचाया है।[7]

सरकारी नीतियों का अपर्याप्त कार्यान्वयन :

भारत सरकार ने पिछड़े वर्गों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे कि ओबीसी आरक्षण और प्रधानमंत्री आवास योजना, लेकिन इन योजनाओं का लाभ पसमांदा मुस्लिमों तक पूरी तरह नहीं पहुँच पाता। इसका कारण प्रशासनिक अक्षमता, भ्रष्टाचार और जागरूकता की कमी है।

पसमांदा मुस्लिम समुदाय के लिए संभावित समाधान :

पसमांदा मुस्लिम समुदाय की समस्याओं और चुनौतियों का समाधान करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। निम्नलिखित कुछ संभावित उपाय हैं :–

शिक्षा में सुधार :

शिक्षा जागरूकता अभियान पसमांदा समुदाय में शिक्षा की महत्ता को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। पसमांदा मुस्लिम छात्रों, विशेष रूप से लड़कियों, के लिए विशेष छात्रवृत्ति योजनाएँ शुरू की जानी चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों का विस्तार कर ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों और कॉलेजों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए, ताकि पसमांदा समुदाय के बच्चों को शिक्षा तक पहुँच मिल सके।[8]

आर्थिक सशक्तीकरण :

पसमांदा मुस्लिमों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए, जो उन्हें आधुनिक अर्थव्यवस्था में रोजगार के लिए तैयार करें। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम सहायता परंपरागत व्यवसायों जैसे बुनकरी को बढ़ावा देने के लिए एम0एस0एम0ई0 योजनाओं के तहत विशेष सहायता प्रदान की जानी चाहिए। पसमांदा समुदाय के लिए विशेष ऋण और वित्तीय सहायता योजनाएँ की जानी चाहिए।

सामाजिक समानता के लिए प्रयास :

जातिगत भेदभाव के खिलाफ अभियान मुस्लिम समाज के भीतर जातिगत भेदभाव को खत्म करने के लिए धार्मिक और सामाजिक नेताओं को जागरूकता अभियान चलाने चाहिए। सामाजिक एकता को बढ़ावा मस्जिदों और कब्रिस्तानों में समानता को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ बनाई जानी चाहिए।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व :

पसमांदा नेतृत्व को प्रोत्साहन राजनीतिक दलों को पसमांदा मुस्लिमों को नेतृत्व की भूमिकाओं में शामिल करना चाहिए। चुनावी रणनीति में समावेश पसमांदा मुस्लिमों के मुद्दों को राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों में शामिल किया जाना चाहिए।

पसमांदा आंदोलन को मजबूत करना :

संगठनात्मक एकता पसमांदा मुस्लिम संगठनों को एकजुट होकर अपने मुद्दों को राष्ट्रीय मंच पर उठाना चाहिए। जागरूकता और नेतृत्व विकास समुदाय के भीतर जागरूकता और नेतृत्व विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए।

निष्कर्ष

पसमांदा मुस्लिम समुदाय भारत के मुस्लिम समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, और राजनीतिक रूप से हाशिए पर रहा है। इस समुदाय को सामाजिक भेदभाव, आर्थिक पिछड़ेपन, शैक्षिक कमी, और राजनीतिक उपेक्षा जैसी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए शिक्षा, आर्थिक सशक्तीकरण, सामाजिक समानता, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व पर ध्यान देना आवश्यक है। पसमांदा मुस्लिम आंदोलन, जिसकी शुरुआत अली अनवर जैसे नेताओं ने की, ने इस समुदाय की आवाज को बुलंद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लेकिन इसे और मजबूत करने की आवश्यकता है। सरकार, सामाजिक संगठन, और मुस्लिम समाज के नेताओं को मिलकर पसमांदा मुस्लिमों के उत्थान के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। केवल तभी यह समुदाय मुख्यधारा में शामिल होकर अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सकेगा।

संदर्भ–सूची :

1. रहमान, मोहम्मद तैमुर और अनिल भूइमाली (2011) : मुसलमान और उनकी आर्थिक स्थिति, दिल्ली, अभिजीत प्रका''ान
2. शा''ा शा0 सिं0 (1995) : सामाजिक विज्ञान हिन्दी वि''वको''ा, नई दिल्ली, किताब घर प्रका''ान
3. भारतीय, स0 (संपा) (2008) : दलित, अल्पसंख्यक स''ाक्तिकरण, नई दिल्ली, राजकमल प्रका''ान
4. कोठारी, रजनी (2005) : भारत में राजनीति कल और आज, नई दिल्ली, वाणी प्रका''ान
5. राजकि''ोर (2006) : दलित राजनीति की समस्याएँ, नई दिल्ली, वाणी प्रका''ान।
6. मिश्र, विमल किशोर, बिहार : एक सामान्य परिचय, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2016, पृ०सं०– 90
7. रजा, जाफर (2004) : इस्लाम सिद्धान्त और स्वरूप, इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन
8. अहमद, अकील (2004) : मुस्लिम विधि, इलाहाबाद, सेंट्रल लॉ एजेन्सी।